

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 09, (फरवरी, 2024)
पृष्ठ संख्या 42-45

किसानों के दोगुनी आय का सफल मार्ग: एकीकृत कृषि प्रणाली



पीयूष यादव¹, डॉ. गरिमा सिंह³, ओम प्रकाश¹, धीर प्रताप²,
संदीप कुमार यादव¹ एवं सचिन कुमार¹

¹परास्नातक छात्र, ²शोध छात्र,

कृषि विभाग, इन्टीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ

³सहायक प्रोफेसर-सह-जूनियर वैज्ञानिक (कृषि विज्ञान)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर बिहार, भारत।

Email Id: yadavpiyush826@gmail.com

परिचय

भारतीय संदर्भ में किसी देश की समृद्धि कृषक समुदाय के कल्याण पर निर्भर करती है। अधिकांश भारतीय कृषक समुदाय कृषि के पारंपरिक मानदंडों का पालन करते हैं जो उनकी आजीविका का समर्थन करते हैं। भारत में खेती छोटी, सीमांत और खंडित भूमि जोत (लगभग 86 प्रतिशत) की विशेषता है और यह मानसून की बारिश पर अत्यधिक निर्भर है। छोटी जोतों का संचालन अक्सर अव्यवहारिक होता है और इस स्थिति में खेती एक लाभदायक व्यवसाय या उद्यम नहीं है।

कृषि में प्रमुख चुनौतियाँ और मुद्दे बाढ़, सूखा और ओलावृष्टि के साथ-साथ उच्च लागत और गुणवत्ता वाले बीजों की प्रमुख उपलब्धता, उर्वरक, सिंचाई, विपणन सुविधा की कमी, कम भंडारण और प्रसंस्करण सुविधाओं आदि हैं। एकीकृत कृषि प्रणाली दृष्टिकोण के साथ संयुक्त कृषि उत्पादन में परिवर्तन की आवश्यकता जिसमें फसल की खेती, डेयरी, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, मशरूम की खेती, कृषि-वानिकी, सुअर पालन,

मधुमक्खी पालन, सब्जी और फलों का उत्पादन, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत (यानी सौर ऊर्जा, बायोगैस) आदि। किसानों की आय को दोगुना करने के लिए किसानों की बुनियादी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कुछ महत्वपूर्ण रणनीतियों को अपनाने की आवश्यकता है।

ये रणनीतियाँ कृषि अनुसंधान और विकास में बड़े पैमाने पर निवेश, अच्छी कृषि पद्धतियों, संरक्षण कृषि प्रौद्योगिकी, किसानों के अनुकूल नीतियों के कार्यान्वयन, उपलब्ध संसाधनों और आदानों के विवेकपूर्ण उपयोग के साथ-साथ बेहतर बाजार और परिवहन सुविधा को अपना सकती हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्य सुधार, बैंक की पर्याप्त और समय पर उपलब्धता द्वारा समर्थित क्रेडिट। यह बताया गया है कि एमएसपी में वृद्धि से किसानों की आय में 13-26 प्रतिशत की वृद्धि होगी। स्मार्ट फार्मिंग और क्रेडिट सपोर्टिंग स्मार्ट फार्मिंग किसान की आय को दोगुना करने की अन्य संभावित रणनीतियाँ हैं। जब हम विविधीकरण की बात करते हैं, तो यह ज्यादातर उच्च मूल्य वाली फसलों से

संबंधित होता है। टिकाऊ उत्पादन के लिए आर्थिक और सामाजिक-पारिस्थितिक पहुंच केवल कृषि प्रणाली के दृष्टिकोण को अपनाकर ही सुनिश्चित की जा सकती है।

कृषि प्रणाली दृष्टिकोण

कृषि प्रणाली उपागम में सभी घटक और गतिविधियाँ जुड़ी हुई हैं, वे एक दूसरे को प्रभावित करती हैं। कृषि में, प्रबंधन प्रथाओं को आमतौर पर व्यक्तिगत कॉर्प के लिए तैयार किया गया था। हालांकि, किसान एक विशेष मौसम, घरेलू जरूरतों और लाभप्रदता के लिए अपनी अनुकूलन क्षमता के आधार पर विभिन्न मौसमों में विभिन्न फसलों की खेती कर रहे हैं।

- यह कृषि उत्पादकता बढ़ाने में प्रमुख बाधाओं की पहचान करने में सक्षम बनाता है।
- भौतिक और सामाजिक आर्थिक वातावरण को समझने के लिए जिसके भीतर कृषि उत्पादन होता है।
- किसान को उसके कौशल, बाधाओं, वरीयताओं के संदर्भ में समझने के लिए और आकांक्षाएँ।
- मौजूदा महत्वपूर्ण कृषि प्रणालियों के प्रदर्शन को समझने और उसका मूल्यांकन करने के लिए।

कृषि में प्रमुख चुनौतियाँ और मुद्दे

- प्राकृतिक आपदाओं का होना (लगातार बाढ़, सूखा और ओलावृष्टि आदि)।
- कम उत्पादकता
- उच्च लागत और संकर बीजोंधुल्ट की कम उपलब्धता।

- संकर और उच्च उपज वाली किस्मों का कम प्रसार।
- धान की परती भूमि का कम उपयोग।
- फसलों की बुवाई में देरी।
- रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का असंतुलन या अत्यधिक उपयोग।
- उच्च उत्पादन लागत।
- कृषि मशीनीकरण का निम्न स्तर।
- ऑन और ऑफ सीजन में बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव।
- विपणन और परिवहन अवसंरचना, प्राथमिक प्रसंस्करण सुविधा का अभाव।
- भंडारण और प्रसंस्करण सुविधाओं की कम और कम क्षमता।

कृषि प्रणाली और इसके घटक

कृषि प्रणाली मिट्टी, पौधों, जानवरों के कार्यान्वयन, बिजली, श्रम, पूंजी और अन्य आदानों का एक जटिल अंतर-संबंधित मैट्रिक्स है जो कि किसान परिवारों द्वारा नियंत्रित किया जाता है और राजनीतिक, आर्थिक, संस्थागत और सामाजिक ताकतों की अलग-अलग डिग्री से प्रभावित होता है जो कई स्तरों पर काम करते हैं। यह संसाधन आधार को संरक्षित करते हुए और पर्यावरणीय गुणवत्ता के उच्च स्तर को बनाए रखते हुए कृषि परिवारों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आर्थिक और निरंतर उत्पादन प्राप्त करने के लिए एक संसाधन प्रबंधन रणनीति है। यह किसान के लिए समृद्धि लाने वाले संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए फसल प्रणाली, पशुपालन, मत्स्य

पालन, वानिकी, रेशम उत्पादन, मुर्गी पालन आदि जैसे कृषि उद्यमों के एकीकरण का प्रतिनिधित्व करता है। कृषि प्रणाली का मुख्य उद्देश्य स्थिरता है जहां, उत्पादन प्रक्रिया को पर्यावरण की गुणवत्ता का उल्लंघन किए बिना इनपुट के कुशल उपयोग के माध्यम से अनुकूलित किया जाता है जिसके साथ यह एक ओर परस्पर क्रिया करता है और दूसरी ओर राष्ट्रीय लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयास करता है, कृषि प्रणाली की अवधारणा विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के लिए फसल के साथ एक या एक से अधिक उद्यमों का संयोजन है।

किसानों की आय दोगुनी करने की रणनीति

- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि करके
- मौसम से पहले अच्छी गुणवत्ता वाले बीजों की समय पर आपूर्ति
- अच्छी कृषि पद्धतियों को अपनाना
- अच्छी गुणवत्ता वाले इनपुट की समय पर उपलब्धता
- कम अवधि और अधिक उपज देने वाली किस्में प्रदान करना
- कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देना
- एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन का अनुकूलन
- एकीकृत कीट प्रबंधन का उपयोग
- सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि
- शस्य सघनता में वृद्धि करके

भूमि की स्थिति के अनुसार सिंचाई एवं अन्य सुविधाओं के लिए कृषि योजना तैयार करनी चाहिए

खरीफ, रबी और जायद 03 वर्ष के लिए उदाहरण—

- धान गेहूँ/दालें/मक्का
- मक्का – गेहूँ/दालें/मक्का
- मक्का गेहूँ/दालें/मक्का-मूंग
- सब्जी (फूलगोभी)-आलू-प्याज-मूंग
- मक्का/सब्जी-आलू-प्याज-मूंग
- धान (अल्पकालिक) – सब्जी – प्याज – मक्का धान – सब्जी – मक्का आदि।

उच्च मूल्य वाली फसलों के साथ कृषि प्रणाली का विविधीकरण

फसल विविधीकरण में कम उत्पादकता, स्थिरता, मिट्टी के स्वास्थ्य, कम आय आदि की समस्या को कम करने में बहुत सारे वादे शामिल हैं, बुनियादी जरूरतों को पूरा करने और कृषि आय को विनियमित करने के साथ-साथ मौसम में उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करना, मूल्य में उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करना, संतुलित खाद्य आपूर्ति सुनिश्चित करना, प्राकृतिक संरक्षण करना। संसाधन, रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक भार को कम करना, पर्यावरण सुरक्षा और रोजगार के अवसर पैदा करना

उत्पादन लागत को कम करके

- फार्म इनपुट, मशीनीकरण लागत और डीजल पर सब्सिडी का प्रावधान
- भ्ल्ट/हाइब्रिड बीजों पर सब्सिडी का प्रावधान

- उर्वरक की संतुलित मात्रा का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना
- हरी खाद का उपयोग उदा. ढेंचा, मूंग, लोबिया, भांग आदि।
- जैव उर्वरकों का उपयोग:—उदाहरण: राइजोबियम, पीएसबी, एजोटोबैक्टर, अजोला, नील हरित शैवाल, माइकोराइजा आदि।
- परिवहन पर सब्सिडी।
- नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग ले. सौर ऊर्जा। गोबर/बायो गैस आदि
- डीएस आर/जीरो टिलेज तकनीक का प्रचार
- कस्टम हायरिंग सिस्टम का प्रचार।
- एकीकृत कृषि प्रणाली को बढ़ावा देना: नियमित आय प्रदान करने के लिए फसलों/बागवानी, डेयरी, मत्स्य पालन और कुक्कुट के सम्मिश्रण को सक्रिय करें।
- सूक्ष्म सिंचाई से फलों, सब्जियों और फूलों की संरक्षित खेती

सूक्ष्म सिंचाई के साथ उच्च मूल्य वाले फलों, सब्जियों और फूलों की संरक्षित खेती से किसान की आय को दोगुना या अधिक करने की काफी संभावना है। ये प्रौद्योगिकियां छोटे भूमिधारक उत्पादकों के लिए बहुत उपयोगी हैं जो आर्थिक प्रासंगिकता को बढ़ावा देने और सामाजिक स्थिरता को बनाए रखने के लिए उनके उत्पादकता स्तर को अधिकतम करने में मदद करती हैं।

निष्कर्ष

निम्न और अत्यधिक उतार-चढ़ाव वाली कृषि उत्पादकता और कृषि आय कृषि संकट के प्रमुख स्रोत हैं। हालाँकि, बाढ़ और सूखे जैसी लगातार प्राकृतिक आपदाओं के कारण भारत में कृषि विकास बेहद अस्थिर रहा है। सिंचाई, उर्वरक, गुणवत्तापूर्ण बीज और कृषि मशीनीकरण जैसे निवेशों में वृद्धि के साथ प्रमुख फसलों की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। मौजूदा और पहले हासिल की गई विकास दर में तेजी से तेजी लाने की जरूरत है। निष्कर्ष निकाला कि कृषि में वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए संबद्ध नवीन दृष्टिकोणों के साथ मिलकर कृषि प्रणाली के दृष्टिकोण को अपनाना एक महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उच्च मूल्य वाली फसलों, कृषि आजीविका के साथ विविधीकरण का समर्थन करने वाली सेवाओं के विविध सेट प्रदान करने के लिए इसे बदलने की आवश्यकता है और प्रासंगिक तकनीकों की पेशकश की जाती है जो उचित क्रेडिट समर्थन स्मार्ट खेती के साथ-साथ एमएसपी सुधार के साथ नीतियों के कार्यान्वयन के साथ एकीकृत हैं।

IFS किसानों की आय को दोगुना करने के लिए एक पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण भी है जिसमें एक उद्यम की अपशिष्ट सामग्री दूसरे उद्यम का इनपुट बन जाती है, इस प्रकार यह कृषि संसाधनों का कुशल और टिकाऊ उपयोग करता है।